RNI NO. - DELHIN/2017/75205

वर्ष : 2 अंक : 5

भाषा सहोदरी

भाषा सहोदरी हिंदी

विषय–सूची

1.	दक्षिण भारत में हिन्दी : दिशा एवं सभावनाएँ	डॉ० के० श्याम सुन्दर	9–10
2.	विश्व में हिंदी का वर्चस्व	आंर्द्रा आर०एस०	11–12
3.	दक्षिण भारत में हिंदी का महत्व	डॉ० नागरत्ना एम०	13–14
4.	हिंदी को रोजगार से जोड़ने की चुनौतियाँ	डॉ० दारा योगानन्द	15–16
5.	विश्व में हिंदी का वर्चस्व	डॉ० श्रीलता सुरेश	17–18
6.	हिन्दी साहित्य में महिलाओं का योगदान	प्रतिभा बि०	19–20
7.	सरकारी तंत्र में हिन्दी की भागीदारी	अमित कुमार दीक्षित	21–22
8.	भारत में हिन्दी के गिरते स्तर में सुधार की संभावनाएँ	सुपर्णा मुखर्जी	23–26
9.	हिदी को रोजगार से जोड़ने की चुनौतियाँ	डॉ० बालाराम परमार	25–26
10.	हिंदी साहित्य में नारी का योगदान	सुषमा	27–28
11.	हिंदी के बढ़ते कदम	डॉ० निशि मोहन	29–30
12.	विश्व में हिंदी का वर्चस्व	डॉ० के० माधवी	31–32
13.	हिंदी साहित्य में महिलाओं का योगदान	डॉ० इन्दिरा	33–34
14.	महिला सशक्तिकरण	रितु थपलियाल	35–36
15.	स्त्री विमर्श	छगन लाल गर्ग	37–38
16.	हिन्दी साहित्य में महिलाओं की भागीदारी	डॉ० अमित शुक्ला	39–40
17.	हिंदी भाषा जगत में जनसंचार माध्यमों की भूमिका	ऐ० माधवी	41
18.	हिन्दी साहित्य में महिला आत्मकथा लेखन : स्वानुभूति का यथार्थ	चेन्नकेशव रेड्डी	42–43
19.	सोशल मीडिया हिन्दी	डॉ० अरूणा हेरेमत	44–45
20.	प्रवासी साहित्य	डॉ० ई० राजा कुमार	46–47
21.	विदेशों में हिन्दी	डॉ० शिवहर बिरादर	48–49
22.	विश्व पटल पर हिंदी के उन्नत कदम	डॉ० अफसर उन्निसाँ बेगम	50–51
23.	हिन्दी में तकनीकी शब्दावली का विकास	हेमलता	52–53
24.	राष्ट्रभाषा हिन्दी का विकास : दशा व दिशा	जे० नागराज	54
25.	दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा	कल्पना दसरी	55–56

डॉ० अरूणा हेरेमत

एम०ए०, एम०फिल०, फिल० एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी
एल०वी०डी० कॉलेज, रायपूर, कर्नाटक
मोबाइल : 08277622133
ई–मेल : bafsarunnisa@gmail.com

सोशल मीडिया हिन्दी

पिछले दो साल के दौरान सोशल मीडिया के ऊपर हिंदी दो उल्लेखनीय पुस्तकें दो उल्लेखनीय प्रकाशकों के यहाँ से प्रकाशित हुई हैं। 2014 में हार्पर कालिन्स पब्लिशर्स इंडिया से पुस्तक आई है 'सोशल मीडिया : संपर्क क्रांति का कल, आज और कल'। जिसके लेखक हैं स्वर्ण सुमन। दूसरी पुस्तक 'नया मीडिया : अध्ययन और अभ्यास' है। पुस्तक 2015 में आई है प्रकाशक पेंगुइन बुक्स और शालिनी जोशी एवं शिवप्रसाद जोशी इस पुस्तक के लेखकद्वय हैं। एक बात और उल्लेखनीय है वह यह कि दोनों पुस्तकें मूल रूप से हिंदी में लिखी गई है। ईमेल से शुरू होकर ब्लॉगिंग, फेसबुक आदि के माध्यम से सोशल मीडिया ने जितने कम समय में व्यवहार से सिद्धांत की यह यात्रा तय की है वह बहुत महत्वपूर्ण है। सबसे नई जानकारी यह है कि दिल्ली विश्वविद्यालय में सीबीसीएस के अंतर्गत हिंदी विभाग द्वारा जो पाठ्यक्रम तैयार किया गया है उसमें सोशल मीडिया का एक अलग से पत्र है और मीडिया से जुड़े अन्य पत्रों में भी उसे पर्याप्त महत्व दिया गया है।

2006 के बाद इस क्रांति का पहला प्रस्फुटन ब्लॉगिंग के रूप में दिखाई दिया। हिंदी में उस दौरान करीब 50 ब्लॉग्स सक्रियतापूर्वक सक्रिय थे। 'मोहल्ला', 'कस्बा', 'हुंकार', 'चवन्नी चैप', 'कबाड़खाना', 'अजदक', 'चोखेर बाली' जैसे कुछ ब्लॉग आज भी याद आते हैं–अपने विषय–वस्तु के कारण और अपने सार्थक हस्तक्षेप के कारण। इन्होंने हिंदी में नए संचार माध्यम के इस विकल्प का इस्तेमाल करते हुए दो–एक सालों के बीच ऐसा माहौल तैयार कर दिया कि हिंदी का सामंती साहित्यिक ढांचा पहली बार दरकता दिखाई देने लगा। पहली बार यह अहसास हुआ कि हिंदी के नए लेखकों की ऐसी पौध आई है जिसने एक दुनिया समानांतर तैयार कर दिया है।

90 का दशक समाप्त होते होते 24 घंटे के टीवी चैनलों का दौर आया जो देखते देखते हिंदी मीडिया का मुख्य चेहरा बनने लगा और उसके दबाव में प्रिंट मीडिया पर पहला असर इस रूप में दिखाई देने लगा कि उसमें से साहित्य का स्पेस धीरे–धीरे गायब होने लगा या कह सकते हैं सिमटने लगा। यह बहुत बड़ा बदलाव है कि 90 के दशक तक जिस बौद्धिकता को प्रिंट पत्रकारिता का मानक माना जाता था अगले दस सालों में वह समाचार पत्रों की बाधा के रूप में देखा जाने लगा। 'जनसत्ता' अखबार का उदाहरण दिया जा सकता है। उसकी सबसे बड़ी आलोचना ही यह कहकर की जाती है कि उसमें समाचार से अधिक विचार को महत्व दिया जाता है।

ऑनलाइन पुस्तकों के बाजार ने हिंदी के नए प्रकाशकों को जाखिम उठाने के लिए प्रोत्साहित किया है। यहाँ हिंद युग्म प्रकाशन का उदाहरण जरूर दिया जाना चाहिए।

पहले यह वेबसाइट था। धीरे–धीरे यह प्रकाशक बन गए और आज हिंदी से अलग पृष्ठभूमि के लेखकों के बड़े प्रकाशन मंच के रूप में हिंद युग्म को देखा जाता है। प्रमुख रूप से ऑनलाइन बिक्री के माध्यम से हिंद युग्म ने न केवल नई तरह के लेखक पैदा किए हैं बल्कि हिंदी में नए तरह के पाठक भी पैदा किए हैं। इस प्रकाशन ने पिछले साल अनजान सी लेखिका अनु सिंह चौधरी के कहानी संग्रह 'नीला स्कार्फ' को महज ऑनलाइन सेल द्वारा हजारों में बेचकर इस बात का मजबूती से अहसास करवाया था कि हिंदी में रूढ़ि से हटकर लिखने वाले लेखकों के लिए एक अच्छा पाठक वर्ग तैयार हो गया है।

एक और तकनीकी क्रांति है जिससे हिंदी को जोड़ने की कवायद बड़ी तेजी से होगा। ईबुक क्रांति। ईबुक ने अमेरिका, यूरोप में किताबों की दुनिया को किताबों को पढने के तौर–तरीकों को और किताबों के बाजार को पूरी तरह से बदलकर रख दिया है। पुस्तक की दुकानें एक–एक कर बंद होती जा रही हैं जबकि किंडल ईबुक रीडर जैसे उपकरणों के माध्यम से पुस्तकें कम कीमत में पाठकों की जेबों में पहुँचती जा रही हैं।

भारत में भी पिछले दो साल के दौरान अमेजन किंडल ईबुक का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है। आने वाले समय में भारत में अधिकतर मध्यवर्गीय युवाओं के पास, किशोरों के पास यह उपकरण मोबाइल की तरह उनकी जीवन शैली से जुड़ जाएगा। अंग्रेजी का पुस्तक बाजार इसके लिए पूरी तरह से तैयार है लेकिन हिंदी इसमें बहुत पीछे है।

सोशल मीडिया पर पुस्तकों के प्रचार–प्रसार का एक नया दौर आएगा जो बेहद प्रतिस्पर्धी होगा, जिसमें किताबों को सभी संभव रूपों में बेचने की होड़ मचेगी। इसका अंतिम फायदा लेखक को ही होगा। उसका ब्रांड बढ़ेगा। हो सकता है कि यह बात साहित्य के मूल्यों के परस्पर विरोधी लगे मगर हिंदी कि धमक बढ़ाने में यह बड़ी भूमिका निभाएगा। अगले चरण की तैयारी शुरू हो चुकी है। तब सही अर्थों में जिम मैकनमारा के शब्दों में कहें तो हिंदी में 'सेकेंड मीडिया एज' की शुरूआत होगी।

ओएनजीसी
ONGC

समुद्र की लहरों से, देश के दिल तक...
ऊर्जा के संचालक

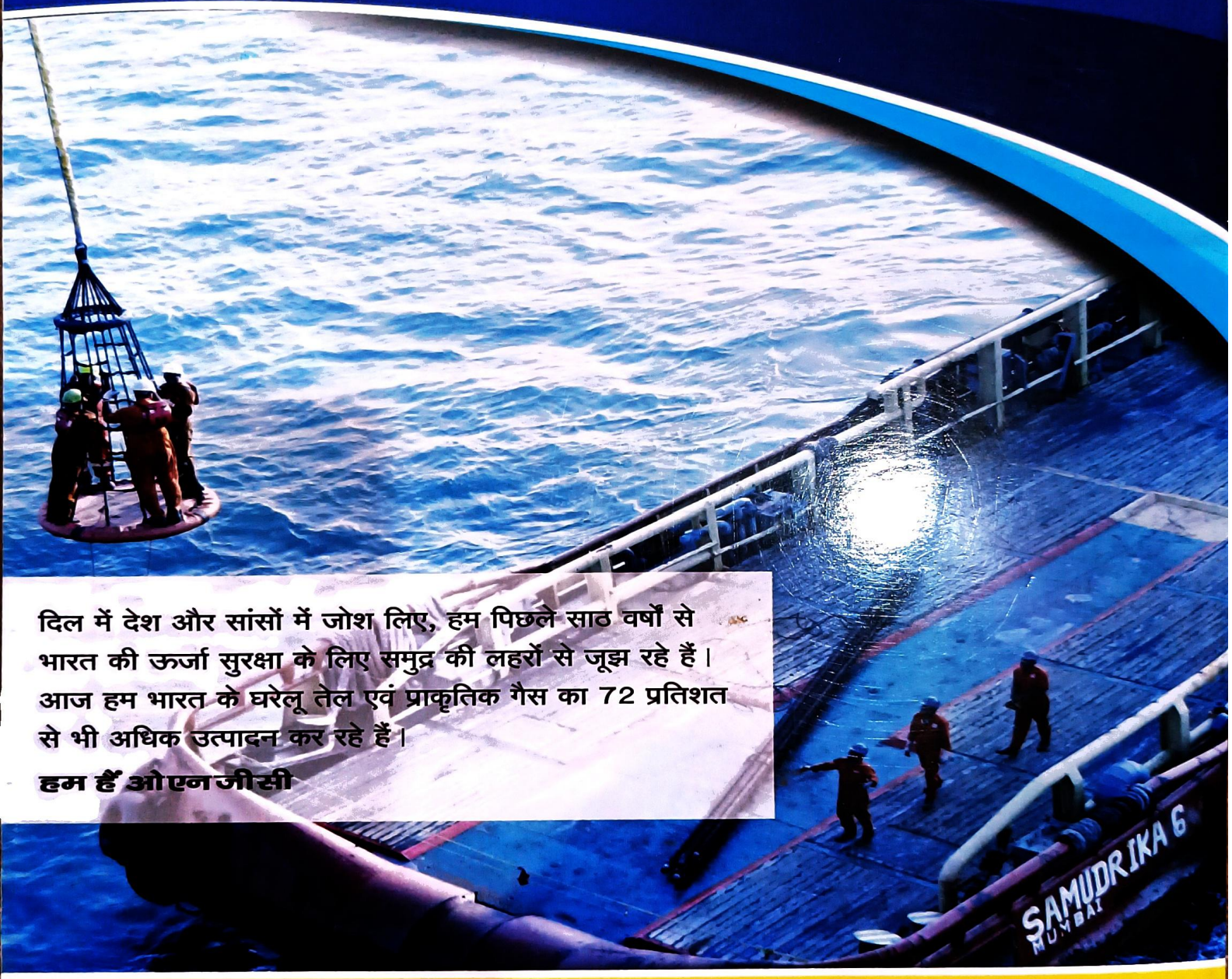

दिल में देश और सांसों में जोश लिए, हम पिछले साठ वर्षों से भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए समुद्र की लहरों से जूझ रहे हैं। आज हम भारत के घरेलू तेल एवं प्राकृतिक गैस का 72 प्रतिशत से भी अधिक उत्पादन कर रहे हैं।

हम हैं ओएनजीसी

नई दिशाएं, नई खोज, नई ऊँचाई एवं नई सोच के साथ आगे बढ़ते हुए – ओएनजीसी

/ONGCLimited @ONGC_ Web: www.ongcindia.com

भाषा सहोदरी हिंदी

कार्यालय : सी-36 बी, अप्पर ग्राउण्ड, जनता गार्डन
(नजदीक-दिल्ली पुलिस सोसायटी), मयूर विहार-1, नई-दिल्ली-110091

मो॰ : 9811972311, 9599303676 Email : sahodaribhasha@gmail.com Website : bhashasahodarihindi.org